बच्चों की सबसे प्यारी विधा लोरी

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

लोरी हिंदी भाषा का एक शब्द है,जिसका अर्थ वह गाना या गीत है जो मां अपने बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं.दुनिया की कोई भी मां तब तक नहीं सोती,जब तक उसका बच्चा नहीं सो जाता है.वो बच्चों को सुलाने के लिए ढेर सारी कोशिश करती है. उसे सीने से लगती है.पीठ थपथपाती है.गोद लेकर झूलाती है.उसकी ज़बान में बातें करती है,लेकिन इस सबसे ज्यादा बच्चा जिससे सुकून पाता है,वह मां की मधुर आवाज़ में गई गई लोरी है. यह एक लोरी पूरी फ़िज़ा बदल देती है. बच्चों को मानसिक सुकून पहुंचता है,और उसे नींद आने लगती है. सिर्फ बच्चे क्या हम बड़ों को भी गुनगुनाने की आदत है.कई ऐसे रिसर्च हुए हैं,जिससे पता चला है कि सिंगिंग ब्रेन के लिए नेचुरल औषधि का काम करती है,क्योंकि इसमें इंडोफ्रीन और ऑक्सीटोसिन जैसे हार्मोन रिलीज़ होते हैं, जिससे हमें तनाव और चिंता कम करने में मदद मिलती है.

लोरी का प्रचलन कब से हुआ यह कहना तो मुश्किल है,पर उसकी परंपरा काफ़ी पुरानी है. मार्कंडेय पुराण में लोरी का ज़िक्र मिलता है,जहां माता मदालसा अपने बच्चे अलर्क को सुलाने के लिए लोरियां गाती हैं.भक्ति काल में तुलसी और सूर के दोहे में इसके रूप दिखते हैं,जहां माता लोरी गाकर उन्हें सुलाने का काम करती हैं.रामचरितमानस में माता कौशल्या बालक श्री राम को सुलाने के लिए लोरी गा रही हैं -

पलियों ललन पालने हो झुलावो

सूरदास के सूर सागर में मां यशोदा भी बालकृष्ण को सुलाने के लिए ऐसी ही जतन करती हैं

जसोदा हरि पालने झुलावें
हलरावें, दुलराई, मल्हावें जोई-
जोई कुछ गावें...

असल में लोरी प्यार और ममता की भाषा है. शिशु जिसे भाषा समझने की क्षमता नहीं होती वह भी लोरी में खो जाता है.

भारत समेत कई देशों में मां बच्चों को लोरियां सुनाते हुए थोड़ा भयभीत करने की भी कोशिश करती हैं,ताकि बच्चा डर से सो जाए.मां को पता है कि बच्चे का सोना कितना ज़रूरी है. इन लोरियों में शेर, लकरबग्गा और बुरी आत्माएं आती हैं, जिसमें बच्चे जल्द नींद के आगोश में खो जाते हैं. ऐसी ही एक लोरी

देखें -

कुत्ता भों-भों करता है
बच्चा डर से सोता है
जब जब कुत्ता आ जाए
हमको तुमको खो जाए
रोयेगा न रोये गा
मुन्ना बेटा सोयेगा..

लोरी का कोई व्याकरण काव्यशास्त्र या पैमाना नहीं है, पर इसमें गीतात्मकता और तुक विधान का पालन अवश्य होता है.यह मीठे शब्दों से गूंथ कर आम शब्दों में बनाए जाते हैं.

लारी को लोकप्रिय करने में फिल्मों का भी बड़ा अवदान है. कई फिल्मी गीत जैसे-

तन्हाई है एक बजा है ख़ाली रस्ता बोल रहा है
सो जा मेरे मुन्ने राजा तू क्यों आंखें खोल रहा है

या फिर-तुम्हें मेरे मंदिर तुम्हीं मेरी पूजा तुम्हीं देवता हो अथवा चंदा है तू मेरा सूरज है तू.. या ए नन्हे से फ़रिश्ते तुमसे ये कैसा नाता.. जैसी अनेक लोरियों के कारण ही फिल्में प्रसिद्ध हुई.यह सभी लोरियां लोगों की ज़बान पर अब भी छाई हुई हैं. साहिर लुधियानवी,शकील बदायूंनी, क़तील शिफाई आदि ने ऐसी बहुत सारी लोरियां लिखी हैं.

हमारे यहां की ज्यादातर लोरियों में चांद का ज़िक्र होता है. लोरियां सुनकर ही हमने चंदा को मामा कहना शुरू किया. कुछ लोरियां तो ऐसी हैं, जो हम सबकी ज़बान पर अमर हो गई हैं-

चंदा मामा दूर के
पूआ पकाये गूर के
आप खाएं थाली में
मुन्नी को दें प्याली में
प्याली गई टूट
मुन्ना गया रूठ..

ये वो लोरी है जिसे हममें से शायद ही कोई ऐसा हो जिसने न सुनी हो.

इसके अलावा लोरी में चिड़िया,फूल, कलियां उड़न खटोले,सोने,चांदी, खिलौने,दूध मलाई इत्यादि का भी जिक्र होता है-

सो गई तितली सो गई मैना
सो गई कोयल सो गई चिड़िया
सो गई बुलबुल सो गई मैना
पंख पखेरू सो गये सारे
तू भी सो जा मुन्ना प्यार..

हसमत कमाल पाशा लोरिया के लिए जाने जाते हैं. उनकी भी एक लोरी में परी का ज़िक्र आया है -

कोई कहानी तुझको सुनाऊं
आ परियों का देश घुमाऊं
थपकी देकर तुझे सुलाऊं
ख्वाब नगर में तू भी खो जा
सो जा सो जा सो जा सो जा

इन सब लोरियों से अलग कुछ लोरियां ऐसी भी हैं,जिसमें उन यतीम और निःसहाय बच्चों का दास्तां है,जिसके मां-बाप जंग में मारे गए हैं. इन लोरियों मैं जो दर्द है,वह हमारी आंखों को नम और दिल को बेचैन कर देता है.उर्दू के प्रसिद्ध शायर फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की एक ऐसी ही लोरी है जिसमें उस जंग की दास्तां है,जिसने बच्चे को उसका बाप भाई-बहन सब कुछ ले लिया है -

मत रो बच्चे
रो रो के अभी
तेरी अम्मी की आंख लगी है
मत रो बच्चे कुछ ही पहले
तेरे अब्बा ने रुखसत ली है
-फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

एक समय में बच्चों को लोरी के बहाने परियों जंगलों, बाग,बगीचों, शेर बाघों तक सैर करने वाली लोरी की परंपरा अब ख़त्म सी हो गई है. आज फोन, कंप्यूटर, टीवी वीडियो गेम्स और सोशल मीडिया की संस्कृति ने लोरी को हाशिये पर डाल रखा है. कामकाजी स्त्रियों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है.आज की मायें लोरियां भूल चुकी हैं. बच्चों की परवरिश उस तरह से नहीं हो रही जो उनका मौलिक अधिकार है.लोरी पर कोई किताबें नहीं आ रहीं.फिल्मों में भी लोरियों का प्रचलन खत्म हो रहा है. आज के इन गानों में न तो वह शब्द और मर्म है,और न अर्थ की गंभीरता है.वो दिन दूर नहीं जब हमारे लिए लोरियां एक विलुप्त विधा के तौर पर सामने आयेंगी.